JAIN REFERENCE LIBRARY ACHARYA SURENDRASURI JAIN TATVA GYANSHALA Page 1/1

अध्युपपन्न

ऋद्धि, रस और साता—इन तीन गौरवों में अत्यन्त आसक्त होने वाला।

समृद्धिरससातागौरवेषु अध्युपपन्ना गृद्धाः।

(सूत्र १.२.५८ वृ प ७२)

अध्रुव अवग्रहमति

व्यावहारिक अवग्रह का एक प्रकार। इन्द्रिय, उपयोग और विषय-संबंध के होने पर भी कदाचित् विषय को बहु, बहुविध आदि पर्यायों के साथ ग्रहण करना और कदाचित् न करना।

सतीन्द्रिये सति चोपयोगे सति च विषयसंबंधे कदाचित् तं विषयं तथा परिच्छिनत्ति कदाचिन्नेत्येतदध्रुवमवगृह्णातीत्युपदिश्यते। (तभा १.१६ वृ)

अध्रुवबन्धिनी

बंध का कारण मिलने पर भी जिस कर्म-प्रकृति का बंध हो भी सकता है और नहीं भी, जैसे—सातवेदनीय, असातवेदनीय, गतिचतुष्क आदि।

निजबंधहेतुसम्भवेऽपि भजनीयबंधा अध्रुवबन्धिन्यः।

(कप्र पृ २७)

अध्रुवसत्ताक

वह कर्म-प्रकृति, जिसकी सत्ता सब जीवों के सर्वदा नहीं होती, जैसे—उच्चगोत्र, सम्यक्त्व आदि।

कदाचिद् भवन्ति कदाचिन्न भवन्तीत्येवमनियता सत्ता यासां ता अध्रुवसत्ताकाः। (कप्र पृ ३०)

अध्रुवोदया

वह कर्म-प्रकृति, जो कभी उदय में आती है, कभी अनुदय-अवस्था में चली जाती है, कभी निमित्त मिलने पर फिर उदय में आ जाती है, जैसे—निद्रा, निद्रानिद्रा आदि।

व्यवच्छिन्नोदया अपि सत्यो याः प्रकृतयो हेतुसम्पत्त्या भूयोऽप्युदयमायान्ति ता अध्रुवोदयाः। (कप्र पृ २९)

अध्वाकाल

समयक्षेत्र में होने वाली सूर्य की गति से पहचाना जाने वाला व्यावहारिक काल, जैसे—समय, आवलिका आदि।

सूरकिरियाविसिट्ठो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो।
अद्धाकालो भन्नइ समयक्खेत्तंमि समयाइ॥

(स्था ४.१३४ वृ प १९०)

अद्धाकाले—से णं समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए जाव उस्सप्पिणीट्ठयाए। (भग ११.१२८)

अध्वा पल्योपम

असंख्य वर्षों का कालखण्ड। अध्वा पल्योपम के दो प्रकार हैं—व्यावहारिक और सूक्ष्म।

व्यावहारिक अध्वा पल्योपम—एक पल्य (कोठा) है जो एक योजन लंबा, एक योजन चौड़ा और एक योजन ऊँचा है। उसकी परिधि कुछ अधिक तिगुनी (तीन योजन से कुछ अधिक) है। ऐसे पल्य को एक, दो, तीन दिन यावत् उत्कृष्टतः सात रात के बढ़े हुए बालाग्रों से ठूंस-ठूंस कर घनीभूत कर भरा जाता है। उस कोठे से सौ-सौ वर्ष बीत जाने पर एक-एक बालाग्र निकाला जाता है। जितने समय में वह कोठा खाली हो जाता है, उतने काल को व्यावहारिक अध्वा पल्योपम कहा जाता है। इसका कोई प्रयोजन नहीं है, केवल प्ररूपणा के लिए प्ररूपणा की जाती है।

सूक्ष्म अध्वा पल्योपम उन बालाग्रों के असंख्य खण्ड कर उस कोठे को ठसाठस भरा जाता है तथा प्रत्येक सौ-सौ वर्षों से एक-एक खण्ड को निकाला जाता है। जितने समय में वह कोठा खाली हो जाता है, उतने काल को सूक्ष्म अध्वा पल्योपम कहा जाता है।

अद्धापलिओवमे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमे य वावहारिए य॥

तत्थ णं जेसे वावहारिए, से जहानामए पल्ले सिया—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं; से णं पल्ले—

गाहा—

एगाहिय-बेयाहिय-तेयाहिय,उक्कोसेणं सत्तरत्तपरूढाणं।
सम्मट्ठे सन्निचिते, भरिए वालग्गकोडीणं॥
ते णं वालग्गे नो अग्गी डहेज्जा, नो वाऊ हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा, नो पलिविद्धंसेज्जा, नो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा।
तओ णं वाससए-वाससए गते एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएणं कालेणं से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे निट्ठिए भवइ।
सुहुमे अद्धापलिओवमे : से जहानामए पल्ले सिया—जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं; से णं पल्ले—

गाहा—

एगाहिय-बेयाहिय-तेयाहिय, उक्कोसेणं सत्तरत्तपरूढणं।
सम्मट्ठे सन्निचिते, भरिए वालग्गकोडीणं॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Mo. 9512234311 www.jainreferencelibrary.org jaintatvagyanshala@gmail.com